ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 40 कुल पृष्ठ-8 21 से 27 अक्टूबर, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 आ.शु.-15

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी, मूर्धन्य संन्यासी सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के प्रधान एवं वैदिक विरक्त मण्डल के अध्यक्ष

स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा) की तपःस्थली दयानन्द मठ चम्बा, हिमाचल प्रदेश का

वार्षिकोत्सव एवं 21वाँ दुर्लभ शारद यज्ञ 8 अक्टूबर, 2021 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने पूरे कार्यक्रम की अध्यता की

दयानन्द मठ चम्बा के प्रधान आचार्य महावीर सिंह शास्त्री ने किया सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन

स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मंडल के पदाधिकारियों एवं शिष्यों ने संभाला व्यवस्था का दायित्व

गत 6 से 8 अक्टूबर, 2021 को चम्बा का वार्षिक समारोह धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता वार्षिकोत्सव एवं शारद यज्ञ का पूरा कार्यक्रम संचालित हुआ। कार्यक्रम का संयोजन दयानन्द मठ चम्बा के आचार्य महावीर जी ने किया तथा शारद यज्ञ का आचार्यत्व युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी एवं स्वामी वेद प्रकाश जी ने संयुक्त रूप से संभाला। यज्ञ के अन्तर्गत स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी वेद प्रकाश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, महात्मा धर्ममुनि जी व आचार्य महावीर सिंह जी के प्रवचन भी होते रहे और श्री राजेश अमर प्रेमी, श्री संदीप आर्य, श्री संजय शास्त्री, श्री सुनील शास्त्री, श्रीमती नीतू आर्या व श्रीमती सरस्वती आर्या के भजनों का भी सुन्दर कार्यक्रम चलता रहा। यज्ञ में वेदपाठ का दायित्व श्री हरि शास्त्री, श्री लोभी राम व श्री रमेश कुमार शास्त्री के अतिरिक्त वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने भी कुशलता के साथ संभाला।

6 अक्टूबर को दयानन्द मठ चम्बा एवं महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय का वार्षिक समारोह सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर आचार्य महावीर सिंह जी ने विद्यालय की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हमारा उद्देश्य बच्चों का निर्माण करना है। इन्हें शिक्षा के साथ–साथ अच्छे संस्कार भी दिये जाते हैं। छात्र एवं छात्राओं को वेद पाठ तथा वैदिक स्वाध्याय करने की विशेष शिक्षा एवं प्रेरणा दी जाती है जिस कारण से वे बड़े सुन्दर ढंग से वेद पाठ कर पाते हैं। प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले शारद यज्ञ का विद्यालय के बच्चों पर विशेष प्रभाव पड़ता है और उनमें प्राचीन वैदिक संस्कृति के प्रति आकर्षण पैदा होता है।

महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय, दयानन्द मठ चम्बा को हिमाचल प्रदेश के विशेष विद्यालयों में गिना जाता है। कार्यक्रम के उपरान्त सभी अविभावकों एवं अन्य महानुभावों के लिए जलपान की सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

7 अक्टूबर, 2021 को प्रातः 6.30 बजे से 8 अक्टूबर, 2021 प्रतः 9.30 बजे तक दुर्लभ शारद यज्ञ चला। निरन्तर चलने वाले इस विशेष यज्ञ में विपुल घृत एवं सामग्री प्रयुक्त हुई और बदल–बदल कर सैकड़ों स्त्री–पुरुषों ने आहुतियाँ प्रदान की। ऋग्वेद के आधर पर यह दुर्लभ यज्ञ राष्ट्र में वीरता, पौरुष एवं स्वाभिमान को बढ़ाने की भावना से किया जाता है। इस यज्ञ के दौरान बीच–बीच में विद्वानों के व्याख्यान एवं भजनीकों के भजन भी नियमित होते रहे और 8 अक्टूबर, 2021 को प्रातः 9.30 बजे इस यज्ञ की पूर्णाहुति की गई।

पूर्णाहुति के अवसर पर उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने मुख्य उद्बोधन में दैनिक संध्या, उपासना, दैनिक स्वाध्याय तथा साप्ताहिक अथवा पाक्षिक यज्ञ अवश्य करने का संकल्प दिलाया। वहीं उन्होंने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं जिससे स्वयं को सुख और प्रसन्नता मिले और दूसरों का उपकार हो वे सभी यज्ञ कहलाते हैं। यज्ञ में प्राणीमात्र के कल्याण की भावना निहित है। उन्होंने कहा कि 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्मः' यज्ञ दुनिया का श्रेष्ठतम् कर्म कहलाता है। स्वामी जी ने कहा कि पिछले लगभग डेढ़ वर्ष से पूरे विश्व में कोरोना वायरस के कारण त्राहि–त्राहि मची हुई है। भारत सहित पूरे विश्व में लाखों लोग इससे संक्रमित हो चुके हैं तथा बहुत बड़ी संख्या में लोग मृत्यु के ग्रास बन गये हैं। स्वामी जी ने कहा कि यज्ञ में यदि गाय का घृत और औषधि युक्त सामग्री का प्रयोग किया जाये तो यह विषैले रोगाणुओं को तो नष्ट करेगा ही क्योंकि यज्ञ के अग्नि में विषैले जीवाणुओं तथा तत्त्वों को नष्ट करने की विलक्षण क्षमता होती है। यज्ञ के द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा, वायु मण्डल की पवित्रता, विविध रोगों का नाश तथा दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है। स्वामी जी ने उपस्थित सभी आर्यजनों को यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व को समझते हुए कहा कि हम सबको प्रतिदिन औषधियुक्त सामग्री तथा शुद्ध देशी घी से यज्ञ करना चाहिए। हमें भारत की प्राचीन यज्ञीय परम्परा को पूरे विश्व में फैलाने का प्रचार–प्रसार अगले पृष्ठ पर जारी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पृष्ठ 1 का शेष

दयानन्द मठ चम्बा, हिमाचल प्रदेश का वार्षिकोत्सव एवं 21वाँ दुर्लभ शारद यज्ञ 8 अक्टूबर, 2021 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

करना चाहिए। इससे मानवता एवं पर्यावरण का अत्यन्त उपकार होगा। स्वामी जी ने कोरोनाकाल में दयानन्द मठ चम्बा की ओर से आचार्य महावीर सिंह जी के नेतृत्व में की गई जनसेवा की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि अपने जीवन को जोखिम में डालकर औरों के लिए समर्पित भाव से कार्य करने की प्रेरणा स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के जीवन से हम सबको मिली है। स्वामी जी स्वयं लोगों के सेवा में सदैव तत्पर रहते थे और उसी भावना से अभिभूत होकर आचार्य महावीर जी व इनके सभी सहयोगियों ने जिनमें मुख्यरूप से स्वामी सुमेधानन्द शिष्यमण्डल, दयानन्द उच्च विद्यालय के सभी अध्यापक–अध्यापिकाएँ एवं अन्य कार्यकर्ता विशेष रूप से प्रशंसा के पात्र हैं। स्वामी जी ने आचार्य महावीर जी के दुलर्भ शारद यज्ञ करने के संकल्प के लिए भी विशेष साधुवाद दिया।

पूर्णाहुति के अवसर पर जहाँ आचार्य महावीर सिंह जी ने सभी सहयोगियों एवं आगन्तुक महानुभावों का मठ की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया तथा अपना आशीर्वाद बनाये रखने की प्रार्थना की।

इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में मुख्यरूप से श्री सुरेन्द्र भारद्वाज पूर्व विधायक, श्री जनकराज दुग्गल अमृतसर, श्री अमर सिंह आर्य, श्री चतर सिंह सूर्यवंशी, श्री रमेश शास्त्री, श्रीमती करुणा आर्या (मंत्री दयानन्द मठ), श्रीमती बृजबाला (प्रधानाचार्या) आदि के अतिरिक्त संन्यासी एवं अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे। विदित हो कि श्री जनकराज दुग्गल दयानन्द मठ के विशिष्ट सहयोगी एवं संरक्षक हैं और दर्लभ शारद यज्ञ के लिए उनका विशेष सहयोग रहता है।

पूर्णाहुति के उपरान्त सभी विद्वानों, उपदेशकों एवं संन्यासियों को आचार्य महावीर सिंह के पौत्र प्रिय ध्रुव कुमार आर्य, उनकी बेटी चेतना आर्या एवं उनकी पुत्रवधु श्रीमती करुणा आर्या के द्वारा दक्षिणा भेंटकर सम्मानित किया गया। तीन दिवसीय कार्यक्रम में विद्यालय की सभी अध्यापिकाओं एवं दयानन्द मठ चम्बा के सभी कार्यकर्ताओं तथा स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल के कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था में अपना योगदान देकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

आर्य समाज मानसरोवर कालोनी, रोहतक का वार्षिकोत्सव उत्साह की वातावरण में हुआ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ विशेष उद्बोधन

धर्मचन्द गाँधी आर्य समाज मानसरोवर कालोनी, रोहतक, हरियाणा का वार्षिकोत्सव 3 अक्टूबर, 2021 को बड़े उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त श्री सुखदेव आर्य तपस्वी, राष्ट्रीय कवि सारस्वत डॉ. मोहन मनीषी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री सत्यपाल आर्य, आर्य समाज न्यूयार्क, अमेरिका के धर्माचार्य वैदिक विद्वान् डॉ. अमरजीत शास्त्री, वैदिक विद्वान् श्री वेदमित्र शास्त्री, डॉ. जगदेव सिंह विद्यालंकार, श्री अभय शास्त्री व श्री शम्भू प्रसाद शास्त्री आदि विद्वानों के अतिरिक्त श्रीमती कविता आर्या दिल्ली एवं श्री सत्यपाल मधुर की भजन पार्टियाँ सम्मिलित हुईं। कार्यक्रम का शुभारम्भ 21 कुण्डीय यज्ञ से किया गया। जिसमें सैकड़ों लोगों ने सम्मिलित होकर श्रद्धा पूर्वक अपनी आहुतियाँ प्रदान कीं। यज्ञ का ब्रह्मत्व श्री शम्भू प्रसाद शास्त्री ने संभाला और श्री अभय शास्त्री व डॉ. अमरजीत शास्त्री ने उनका सहयोग किया।

इस अवसर पर अपने ओजस्वी उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि यज्ञ के द्वारा न केवल पर्यावरण शुद्ध होता है बल्कि अनेक रोगों में भी यज्ञ अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यज्ञ में डाली जाने वाली सामग्री में विविध औषधियाँ मिलाई जाती हैं जिनके दहन से रोग नाशक गैसें निकलती हैं और विभिन्न रोगों को समाप्त करती हैं। स्वामी जी ने वायु प्रदूषण तथा वायुमण्डल में फैले विशाक्त विषाणुओं एवं कीटाणुओं पर यज्ञ के प्रभाव का तर्कसम्मत विवेचन करके श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

राष्ट्रीय कवि सारस्वत मोहन मनीषी जी ने अपनी ओजस्वी कविताओं के माध्यम से राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं पर श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री सत्यपाल आर्य जी ने आर्य समाज के भविष्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में यदि सम्पूर्ण आर्य जगत संगठित होकर कार्य करे तो आर्य समाज एक बार फिर से एक तेजस्वी एवं सक्रिय संगठन के रूप में प्रतिष्ठित हो सकता है।

डॉ. अमरजीत शास्त्री जी ने अमेरिका में चल रही आर्य समाज की गतिविधियों पर प्रकाश डाला और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व को दर्शाया।

श्री सुखदेव तपस्वी जी ने मनुष्य के जीवन में तप के महत्त्व को समझाया और जीवन के उद्देश्य पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम में आर्य समाज के संरक्षक श्री नन्दलाल गाँधी जी का भव्य स्वागत किया गया और सभी विद्वानों को भी आर्य समाज की ओर से स्मृति चिन्ह एवं शॉल देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की पूरी व्यवस्था आर्य समाज के प्रधान श्री सुरेश मित्तल, मंत्री श्री यशपाल भाटिया, कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र नाशा, उपप्रधान श्री सुरेश गाँधी आदि ने बड़ी कुशलता के साथ संभाला। कार्यक्रम के उपरान्त सामूहिक रूप से भोजन की व्यवस्था की गई थी जिसमें सभी उपस्थित लोगों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

आर्य समाज का सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा बांग्लादेश में हिन्दू अल्पसंख्यकों के ऊपर हो रहे अत्याचार की घोर निन्दा करती है

बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के प्रति हो रहा अत्याचार बर्दाश्त नहीं किया जायेगा – स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बांग्लोदेश में अल्पसंख्यक हिन्दुओं के प्रति हो रहे अत्याचार पर रोश व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान समय में जिस तरह से बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिन्दुओं के साथ वहाँ के शरारती एवं साम्प्रदायिक तत्व व्यवहार कर रहे हैं वह अत्यन्त घृणित एवं निन्दनीय है। आर्य समाज संगठन ऐसे साम्प्रदायिक दंगों तथा धर्म के नाम पर अफवाह फैलाकर नर–संहार करने, धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने तथा दूसरे धर्म के लोगों को प्रताड़ित एवं परेशान करने को अमानवीय एवं मानव अधिकारों का उल्लंघन मानता है। स्वामी जी ने बांग्लादेश की सरकार से आग्रह किया है कि बांग्लादेश में हिन्दू अल्पसंख्यकों के ऊपर हो रहे अत्याचार को संज्ञान में लेकर शीघ्र कार्यवाही करके दोषियों को कठोर से कठोर सजा दिलवाने की कार्यवाही करे। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने इस सम्बन्ध में भारत के विदेश मंत्री तथा प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री को भी पत्र लिखकर इस मुद्दे को प्राथमिकता के आधार पर लेने का निवेदन किया है।

बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के प्रति साम्प्रदायिक हिंसा बढ़ती जा रही है और वहाँ की सरकार कट्टरपंथियों को रोकने में नाकाम दिखाई दे रही है। बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिन्दूओं तथा अन्य धर्म के लोगों को निशाना बनाकर जिस तरह से वहाँ के कट्टरपंथी संगठनों तथा वहाँ के बहुसंख्यक लोगों ने हमले किये हैं वह बहुत ही घृणित एवं निन्दनीय कार्य है। क्योंकि भारत और बांग्लादेश के बीच हमेशा ही एक विशेष और प्रगाढ़ रिश्ता रहा है। दोनों देशों के बीच काफी चीजों का आदान–प्रदान होता है और भारत हमेशा से बांग्लादेश का सहयोग करता आया है। वर्तमान बांग्लादेश भारत का ही अभिन्न अंग था इसलिए वहाँ हमेशा से सभी धर्म के लोग आपस में एक–दूसरे से मिलजुल कर रहते रहे हैं और एक–दूसरे के धार्मिक अनुष्ठानों में सम्मिलित होते रहे हैं। भारत से अलग हो जाने पर भी बांग्लादेश में रह रहे सभी नागरिक आपस में मिलजुलकर एक–दूसरे की भावनाओं का सम्मान सदैव किया करते थे। परन्तु पिछले कुछ दिनों से बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों के साथ होने वाली कट्टरपंथी हिंसा के कारण वहाँ पर अल्पसंख्यक हिन्दू भय के वातावरण में जी रहे हैं और वहाँ का सौहार्दपूर्ण वातावरण बिगड़ रहा है, जिसका प्रभाव भारत में भी पड़ना स्वाभाविक है। इससे दोनों देशों के बीच तथा नागरिकों के मध्य कड़वाहट बढ़ेगी।

ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि स्थिति को समय रहते नियंत्रित किया जाये और लोगों के मानव अधिकारों की सुरक्षा की व्यवस्था की जाये।

बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिन्दुओं के ऊपर हो रहे अत्याचार के सम्बन्ध में उचित कार्यवाही हेतु लिखा गया पत्र अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

WORLD COUNCIL OF ARYA SAMAJ

"दयानन्द भवन", 3/5, आसफ अली रोड
(रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002
"Dayanand Bhawan", 3/5, Asaf Ali Road
(Ramlila Ground), New Delhi-110002

फा. सं. सार्व. आ. प्र.सभा/21/ दिनांक : 16–10–2021

सेवा में,
माननीय श्री एस. जयशंकर जी
विदेश मंत्री, भारत सरकार, जवाहर लाल नेहरू भवन, 23 डी, जनपथ, नई दिल्ली-110011

विषय :- बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिन्दुओं को न्याय दिलाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

सादर नमस्ते!

आशा है ईश कृपा से आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि सन् 1971 में बांग्लादेश के निर्माण के समय से ही वहाँ पर सभी धर्मों के लोग मैत्रीपूर्ण वातावरण में रह रहे हैं। सभी को अपने-अपने धर्म के अनुसार अपनी धार्मिक परम्पराओं का अनुसरण करने का अधिकार प्राप्त रहा है। परन्तु विगत कुछ दिनों से अल्पसंख्यक हिन्दुओं के साथ विद्वेषपूर्ण व्यवहार किया जा रहा है और उनके मंदिरों व धर्मस्थलों को तोड़ा जा रहा है और अल्पसंख्यक हिन्दूओं पर मनमाने अत्याचार किये जा रहे हैं, ऐसी सूचनाएँ मीडिया के माध्यम से लगातार भारत में लोगों को भी प्राप्त हो रही हैं और उनमें आक्रोश बढ़ता जा रहा है, यह एक विशेष प्रकार की साम्प्रदायिक एवं कट्टरता से ओत-प्रोत मानसिकता है जो बांग्लादेश के कुछ अतिवादी एवं मानवता के शत्रु इन गतिविधियों को अन्जाम दे रहे हैं। यह सर्वविदित है कि बांग्लादेश के निर्माण में भारत की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है और बांग्लादेश को भारत अपना एक स्वाभाविक मित्र देश मानता है किन्तु इन साम्प्रदायिक घटनाओं से वातावरण में कुछ कट्टरपंथी लोग विष घोलने का कार्य कर रहे हैं।

अतः आपसे विशेष प्रार्थना है कि आप अविलम्ब इस सम्बन्ध में भारत सरकार की ओर से तत्काल हस्तक्षेप करें तथा बांग्लादेश की सरकार को इन साम्प्रदायिक दंगो को रोकने के लिए बाध्य करें। गत दिनों बांग्लादेश के अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर किये गये अमानवीय अत्याचार एवं जान-माल के नुकसान की भरपाई के लिए बांग्लादेश की सरकार से आग्रह करें कि निम्नलिखित बातों को क्रियान्वित किया जाये :-

1. बांग्लादेश सरकार की ओर से वहाँ हिन्दू जनता पर हो रही हिंसक घटनाओं की तत्काल निन्दा करके उन्हें रोका जाये।
2. वहाँ के अल्पसंख्यक हिन्दुओं को सरकार की ओर से तत्काल प्रशासकीय एवं सामाजिक संरक्षण प्रदान कराया जाये।
3. हिंसा में घायल हुए लोगों को मानवता के आधार पर तत्काल इलाज की सुविधा उपलब्ध कराई जाये तथा उनके तोड़े गये हिन्दू धार्मिक स्थलों का निर्माण सरकार द्वारा कराया जाये। इसी प्रकार जिन लोगों के घरों को जलाया गया है अथवा जान-माल की हानि हुई है उसकी पूर्ति सरकार करे।
4. मानवाधिकार के नियमों का तत्काल अन्तर्राष्ट्रीय कानून के तहत पालन कराया जाये।

हमें पूरा विश्वास है कि आप उपरोक्त विषय की गम्भीरता एवं संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए शीघ्र कार्यवाही करने का कष्ट करेंगे। कृपया की गई कार्यवाही से अधोहस्ताक्षरी को भी अवगत कराने का कष्ट करें। सधन्यवाद,

भवदीय

(स्वामी आर्यवेश)
सभा प्रधान

प्रतिलिपि :-
(1) माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी
प्रधानमंत्री भारत सरकार, नई दिल्ली
(2) माननीय श्री अमित शाह जी
गृहमंत्री भारत सरकार, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23274771, 23260985, टेलीफैक्स : 011-23274216
ई–मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in
वैबसाईट : www.vedicaryasamaj.com

अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के अवसर पर जनहित विकास परिषद् हरियाणा द्वारा आयोजित श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान समारोह का जीन्द (हरि.) में हुआ भव्य आयोजन

शिक्षक ही सही अर्थों में राष्ट्र के निर्माता होते हैं – स्वामी आर्यवेश

शिक्षक का सम्मान राष्ट्र का सम्मान है – डॉ अविनाश कुमार चावला

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी का किया गया नागरिक अभिनन्दन

अंतरराष्ट्रीय शिक्षक दिवस के अवसर पर जनहित विकास परिषद् हरियाणा द्वारा जाट वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जींद, हरियाणा में श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में विश्व की समस्त आर्य समाजों के सर्वोच्च संठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी पहुंचे।

इस अवसर अपना उद्बोधन देते हुए स्वामी जी ने कहा की शिक्षक ही सही अर्थों में राष्ट्र निर्माता होते हैं। एक अध्यापक ही इस राष्ट्र निर्माण में अपनी सही भूमिका निभा सकता है। उन्होंने कार्यक्रम में सम्मानित होने वाले सभी अध्यापकों को साधुवाद देते हुए कहा कि अभी आपको इस सम्मान के बाद रुकना नहीं है अपितु और ज्यादा उत्साह के साथ आगे बढ़ना है ताकि जिस संस्था जनहित विकास परिषद् ने आपको सम्मानित किया है उसे भी गौरव का अनुभव हो।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. अविनाश कुमार चावला ने कहा कि एक शिक्षक का सम्मान ही राष्ट्र का सम्मान है। यदि कोई संस्था या समिति किसी शिक्षक को सम्मानित करती है तो उसमें स्वयं उस संस्था का सम्मान होता है। एक शिक्षक को सदैव शिक्षा व विद्यार्थी के प्रति समर्पित होना चाहिए।

कार्यक्रम में विशेष रूप से पहुंचे स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि जनहित विकास परिषद् हरियाणा पिछले बहुत लंबे समय से समाज में प्रेरणादायी कार्य कर रही है जिसके लिए परिषद् के तमाम पदाधिकारी व सदस्य बधाई के पात्र हैं।

इस अवसर पर डॉ. मीना शर्मा वर्धमान हॉस्पिटल जींद व श्री नंदलाल मिगलानी प्रसिद्ध शिक्षाविद ने भी सभी शिक्षकों को मंच के माध्यम से अपनी शुभकामनाएं दी व कार्यक्रम के आयोजक जनहित विकास परिषद् हरियाणा का भी आभार व्यक्त किया।

परिषद् के संयोजक श्री केवल सिंह जुलानी ने संस्था द्वारा किए गये कार्यों के बारे में विस्तार से बताया। परिषद् के प्रधान श्री प्रदीप बड़ोदी ने कार्यक्रम आए हुए सभी मेहमानों का स्वागत किया।

इस कार्यक्रम मे श्री मंगल सिंह, श्री कृष्ण दहिया, श्री रवीन्द्र बेरीवाल, श्री अजय भोला, श्री विकास चहल, श्री देवेंद्र सहारण, श्री सूर्यदेव आर्य, श्री सत्यवान सांगवान, श्री जयवीर झांझ, श्री अशोक आर्य खटकड़, श्ररी सुरेन्द्र खटकड़, श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री सज्जन सिंह राठी, श्री विवेकानन्द शास्त्री रोहतक आदि मौजूद रहे।

इस कार्यक्रम में सर्वश्री जगबीर सिंह प्रधानाचार्य दालमवाला, सौरभ भारद्वाज प्रधानाचार्य जाट सीनियर सेकेंडरी स्कूल जींद, सुमन सहारण पीजीटी सीनियर सेकेंडरी स्कूल जींद, शीला देवी पीजीटी आरोही मॉडल स्कूल हसनपुर, कुमारी हिना दुनेजा पीजीटी गढ़वाली खेड़ा, राजबाला पीजीटी किनाना, देवेंद्र कौशिक पी जी टी खरक रामजी, नरेश कुमार पीजीटी करसिंधु खेड़ा, कृष्ण चंद पीजीटी धमतान साहिब, आदर्श कुमार गणित अध्यापक घसो, राम प्रसाद संस्कृत अध्यापक भोंगरा, जय भगवान मुख्याध्यापक खेड़ा गेंडे वाला, राजपाल पीटीआई गढ़वाली खेड़ा, नेहा रानी ड्राइंग अध्यापिका कालवन, श्याम ड्राइंग अध्यापक डीएन मॉडल स्कूल जींद, श्रीमति सरोज बाला जेबीटी जीतगढ़, सतपाल सिंह जेबीटी न्यू कृष्णा कॉलोनी जींद, सुरेंद्र मांगोरिया जेबीटी बुआना, विक्रम जेबीटी रविदास बस्ती सफीदों, सतीश कुमार जेबीटी खरक, अमित कुमार जेबीटी दड़ौली खेड़ा, अनिल कुमार जेबीटी भाना ब्राह्मण आदि अध्यापकों का हुआ सम्मान।

स्वामी आदित्यवेश जी का हुआ नागरिक अभिनन्दन

कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के अध्यक्ष युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी का नागरिक अभिनंदन किया गया। उन्हें स्मृति चिन्ह एवं शॉल भेंट करके उपस्थित जनसमूह ने तालियों की गड़गड़ाहट से विशेष सम्मान प्रदान किया।

स्वामी आदित्यवेश जी जिनका पूर्व नाम ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य था उन्होंने 13 मार्च, 2021 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक के प्रांगण में स्वामी आर्यवेश जी से संन्यास की दीक्षा लेकर अपना पूरा जीवन महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज की विचारधारा को जन–जन तक पहुँचाने और युवाओं में विशेष जागृति उत्पन्न करने के लिए समर्पित कर दिया।

स्वामी आदित्यवेश जी संन्यास दीक्षा के उपरांत पहली बार जींद में किसी सार्वजनिक कार्यक्रम मे पधारे हैं। इसलिए आज जींद में विभिन्न संस्थाओं एवं नागरिकों द्वारा उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया जा रहा है।

इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी ने जनहित विकास परिषद्, हरियाणा तथा स्वागत करने वाली अन्य सामाजिक संस्थाओं का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि प्रत्येक संस्था एवं व्यक्ति का उत्तरदायित्व है कि वह समाज में फैली बुराइयों के प्रति अपनी आवाज बुलंद करते हुए समाज को सही दिशा देने का कार्य करें।

इस अवसर पर जनहित विकास परिषद् हरियाणा, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद जींद, शहीद भगत सिंह युवा परिषद् जींद, जाट स्कूल जींद व अनेक संस्थाओं ने अपनी शुभकामनाएं स्वामी आदित्यवेश जी को दी। इस कार्यक्रम का संयोजन परिषद् के संयोजक श्री केवल सिंह जुलानी ने किया।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हंसली, अमृतसर द्वारा आयोजित सांस्कृतिक विरासत संभाल कार्यक्रम 17 अक्टूबर, 2021 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

भारतीय संस्कृति के प्रकाश पुंज थे योगेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज

– स्वामी आर्यवेश

महापुरुषों का अपमान आर्य समाज बर्दाश्त नहीं करेगा

– ओम प्रकाश आर्य

सांस्कृतिक विरासत सम्भाल कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्व की गौरवमय संस्कृति के गौरव महापुरुष, प्रकाश पुंज योगिराज श्रीकृष्ण जी विषय पर विशाल कार्यक्रम एस.एल. भवन स्कूल, शिवाला भाईयां के सामने, बटाला रोड, अमृतसर, पंजाब में आर्य समाज, महर्षि दयानंद धाम, बाजार हंसली, अमृतसर की ओर से 17 अक्टूबर, 2021 (रविवार) को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री ओम प्रकाश आर्य जी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली से पधारे। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य दयानन्द शास्त्री जी की अगुवाई में पं. संतोष शास्त्री, पं. तेज नारायण शास्त्री, पं. निरंजन शास्त्री, पं गंगाधर शास्त्री, पं. सिकन्दर शास्त्री ने ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री अरविन्द मेहता उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री अनिल कपूर अध्यक्ष डिस्ट्रीब्यूशन एसोसिएशन, श्री विजय सर्राफ स्वागताध्यक्ष गोल्ड एण्ड सिल्वर एसोसिएशन, श्री जुगल महाजन महामंत्री आस पंजाब पार्टी, श्री तरसेम लाल प्रधान जिला आर्य सभा गुरदासपुर, श्री देव पाल आर्य प्रधान आर्य समाज लुधियाना, श्री इन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर, श्री मनीष खन्ना मंत्री आर्य समाज मॉडल टाऊन, श्री अतुल मेहरा कोषाध्यक्ष आर्य समाज मॉडल टाऊन, स. चरणजीत सिंह, प्रिं. रजनी शर्मा कृष्ण कन्या स्कूल, श्रीमती मधुर भाषिणी दीनानगर, श्री आत्म प्रकाश लुधियाना, श्री प्रवीण पसाहन आर्य समाज जंडियाला गुरु, श्रीमती सुलोचना आर्या, श्री बालकृष्ण शर्मा आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे। मंच का संचालन युवा विद्वान् डॉ. नवीन आर्य ने बड़ी कुशलता के साथ किया। इस कार्यक्रम में फिरोजपुर से आए श्री विजय आनन्द जी भजनोपदेशक ने विशेष शमां बांधते हुए श्री कृष्ण जी के जीवन पर आधारित भजनों से उपस्थित श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने भारतीय संस्कृति के पुरोधा, प्रकाश पुंज योगेश्वर श्रीकृष्ण जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आज योगेश्वर श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में विभिन्न भ्रांतियाँ एवं दुष्प्रचार पूरे समाज में फैला रखी हैं। योगेश्वर श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कहा है कि योगेश्वर श्रीकृष्ण का जीवन आप्त पुरुषों के समान था और उनके जीवन में कोई भी दोष दिखाई नहीं देता। ऐसे निष्कलंक एवं पवित्र महापुरुष के सम्बन्ध में उनकी धर्मपत्नी रुकमणि के बदले राधा नाम की महिला को जोड़ना, 16 हजार महिलाओं का पति कहना, 1 लाख 92 हजार पुत्रों का पिता बताना, गोपियों के साथ रासलीला करते हुए दिखाना, गोपियों के कपड़े चुराने वाला, भेष बदलकर चूड़ी पहनाने वाला बताना, माखन चोर, छलिया, लम्पट आदि निम्न स्तर के शब्दों से उनके नाम को कलंकित करना एक घोर आपत्तिजनक कार्य है और ये सब कुछ पुराणों के नाम पर या श्रीकृष्ण जी की लीलाओं के नाम पर किया जा रहा है। जो कौम अपने महापुरुषों के सम्मान को सुरक्षित नहीं रख सकती है उनके ऊपर निराधार और निम्न स्तर के आरोप लगाती है। वह कौम कभी जिन्दा नहीं रह सकती। स्वामी जी ने कहा कि राधा नाम की महिला का नाम भागवत आदि पुराणों में नहीं है किन्तु उसके बावजूद भी उसे कृष्ण की प्रेमिका बताकर उसके संग नाचते हुए दिखाना श्रीकृष्ण जी का घोर अपमान है और उनकी सात्विक वृत्ति से ओत–प्रोत रुकमणि के साथ घोर अन्याय है। अतः आज प्रबुद्ध समाज को इस सम्बन्ध में जागरूक होकर आगे आना चाहिए और जो लोग योगेश्वर श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में इस प्रकार की निराधार भ्रांतियाँ फैलाते हैं उनका सार्वजनिक रूप से विरोध होना चाहिए। श्रीकृष्ण जी के सम्बन्ध में ये सभी भ्रांतियाँ निराधार हैं, किन्तु अन्ध परम्परा से लोग इन भ्रांतियों के प्रति उदासीन हैं और उनका खण्डन या विरोध नहीं करते। आर्य समाज अपने महापुरुषों के सम्बन्ध में भ्रान्त धारणाओं को प्रचारित–प्रसारित करने वालों का विरोध करेगा। स्वामी जी ने योगेश्वर श्रीकृष्ण जी की विविध विशेषताओं पर तर्कसंगत विचार प्रस्तुत कर श्रोताओं के मस्तिष्क को झकझोर दिया। पूरे आयोजन की ओर से स्वामी आर्यवेश जी को शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया और तालियों की गढ़गढ़ाहट से उनका स्वागत किया गया।

अपने ओजस्वी उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने निष्काम कर्म की व्याख्या को और सरल एवं स्पष्ट करते हुए बताया कि मनुष्य को परमात्मा ने कर्म करने का अधिकार दिया है और कर्म करने में वह स्वतंत्र है किन्तु कर्म का फल भोगने में परतन्त्र है। योगेश्वर श्रीकृष्ण गीता में 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन्।' इस श्लोक के माध्यम से यही प्रेरणा दे रहे हैं कि कर्म करने का तुम्हें अधिकार है, किन्तु तुम्हें फल की इच्छा छोड़ देनी चाहिए। फल तुम्हारे आधीन नहीं है। कर्म का फल परमपिता परमात्मा देते है। अतः इस गूढ़ रहस्य को जो व्यक्ति समझ लेगा वह फल में आसक्त होने के बजाय कर्म में ही विशेष प्रयत्न एवं पुरुषार्थ करेगा और ऐसा करने वाला व्यक्ति ही निष्काम कर्म करने वाला समझा जायेगा। मनुष्य के जीवन का यही रहस्य लोगों को समझ नहीं आ रहा और वे कर्म के बदले फल में ही अधिक आसक्ति एवं इच्छा बनाये रखते हैं।

आज जरूरत इस बात की है कि हमलोग गम्भीरता से एवं पूरे विवेक से यह निश्चय कर लें कि भविष्य में हमें प्रयत्न पूर्वक शुभ कार्य, परोपकार के कार्य, यज्ञीय कार्य या प्राणी मात्र की भलाई के कार्य ही करने हैं। कभी मन में भी किसी के प्रति द्वेष, घृणा, हिंसा या उसे शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक कष्ट पहुँचाने का विचार भी नहीं करना चाहिए। ऐसा करने वाले लोग निश्चय ही अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं, सफल बना सकते हैं और मनुष्य योनि को प्राप्त करके उसके द्वारा अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

आज हम सबको मिलकर युवा पीढ़ी को जागरूक करने की जरूरत है कि वे अपने देश की विरासत को संभाल कर रखें और नशे आदि से दूर रहें। स्वामी जी ने कहा कि आज का युवा नशे का गुलाम होता जा रहा है। देश की युवा पीढ़ी को नशे से बचाने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों को राजस्व को छोड़कर नशे पर प्रतिबंध लगाने के लिए शीघ्र कार्रवाई करनी चाहिए। नशाबंदी होने से देश कई जटिल समस्याओं से बच जाएगा। देश में नशाबंदी का कानून केन्द्रीय स्तर पर बनना चाहिए इसके साथ ही साथ राज्य सरकारों को भी नशे के खिलाफ सख्त कानून बनाने चाहिए।

आर्य समाज अपने प्रारम्भिक काल से ही नशे के विरुद्ध आन्दोलन एवं प्रदर्शन करता रहा है। स्वामी जी ने बताया कि वर्ष 1996 में हरियाणा में बंसीलाल की सरकार ने टैक्स की परवाह न करते हुए नशाबंदी की थी। राज्य सरकारों को राजस्व बढ़ाने की बजाय युवाओं को चरित्रवान एवं नशामुक्त करने का प्रयास करना चाहिए जिससे देश का युवा चरित्रवान एवं संस्कारित होकर देश की सेवा कर सके। यदि पूरे देश में एक साथ नशाबन्दी लागू की जाती है तभी इसका प्रभाव देखने को मिलेगा।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. नवीन आर्य ने इस बात पर दिया कि वर्तमान में पूरे विश्व में वैदिक संस्कृति के द्वारा ही शांति स्थापित की जा सकती है। आज का कार्यक्रम योगेश्वर श्रीकृष्ण जी महाराज के सम्बन्ध में फैलाई जाने वाली भ्रांतियों के निवारण के लिए आयोजित किया गया था और स्वामी आर्यवेश जी ने अत्यन्त प्रभावशाली और तर्कपूर्ण ढंग से योगेश्वर श्रीकृष्ण के जीवन प्रकाश डालकर हम सबका मार्गदर्शन किया है इसके लिए हम सब उनके हृदय से आभारी हैं।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश आर्य ने सभी आगन्तुक महानुभावों और विशेष रूप से स्वामी आर्यवेश जी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आज का कार्यक्रम महर्षि दयानन्द सरस्वती की दूसरी जन्मशती एवं आर्य समाज की स्थापना के 150वीं वर्षगांठ, 2025 को समर्पित है। वर्ष 2025 तक पूरे पंजाब में ये कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे और 2025 में अमृतसर में विशाल आयोजन करके महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति अपना समर्पण एवं संकल्प व्यक्त करते हुए भावी कार्यक्रम की योजना बनाई जायेगी। श्री आर्य जी ने पूरे पंजाब के आर्यों एवं भारतीय संस्कृति के प्रेमियों का आह्वान किया कि हम सबको मिलकर भारतीय संस्कृति के समस्त महापुरुषों और पुरोधाओं के सम्मान के लिए कृत संकल्प होना चाहिए। हम अपने महापुरुषों का अपमान नहीं होने देंगे। उनके सम्बन्ध में फैलाई जाने वाली भ्रांतियों का ऐसे आयोजन करके हम निराकरण करते रहेंगे। आज पूरे विश्व में वैदिक संस्कृति के प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है। जिसके लिए हम सभी समान विचार रखने वाले संगठनों एवं लोगों से अपील करते हैं कि हम मिलकर इस दिशा में कार्य करें। श्री दयानन्द शास्त्री जी द्वारा शांति पाठ कराया गया और कार्यक्रम सम्पन्न हो गया। कार्यक्रम के पश्चात् जलपान की सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

हरियाणा के ऐतिहासिक नगर भिवानी में विशाल आर्य महासम्मेलन का हुआ भव्य आयोजन

सैकड़ों बाल्मिकी नवयुवकों को सम्मेलन में किया गया सम्मानित

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे कार्यक्रम के मुख्य वक्ता

गत् 6 से 10 अक्टूबर, 2021 तक हरियाणा के ऐतिहासिक नगर भिवानी में विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। यह आयोजन प्रसिद्ध वैद्य बंशीलाल पार्क में रखा गया था। इसमें हरियाणा के विभिन्न जिलों तथा अन्य प्रदेशों से भी भारी संख्या में आर्यजन और विशेष रूप से बाल्मिकी नवयुवकों ने भाग लिया। इस सम्पूर्ण आर्य महासम्मेलन के मुख्य संयोजक कर्मठ कार्यकर्ता आर्य समाज जूई, जिला–भिवानी के प्रधान श्री बाबूलाल आर्य रहे। उनके साथ श्री इन्द्र सिंह आर्य सेवानिवृत्त एस.डी.एम., श्री चन्द्र प्रकाश मलिक, निदेशक सोहन लाल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जूई, डॉ. भूप सिंह आर्य, आर्य समाज नया बाजार के प्रधान श्री सुभाष आर्य, आर्य समाज घण्टाघर के प्रधान श्री विमलेश प्रधान, श्री रामफल आर्य, श्री धर्मेन्द्र कुमार व श्री अशोक पत्रकार आदि का विशेष सहयोग रहा। इनके अतिरिक्त श्री सुरेन्द्र मदान, श्रीमती विद्यादेवी, श्री नरदेव आर्य, डॉ. एन.पी. गौड़ बहल, श्री शेर सिंह आर्य निमड़ीवाली, श्री जय प्रकाश बोहरा अनाज मण्डी भिवानी, श्री महेश आर्य, डॉ. ओम प्रकाश आर्य, श्री रणसिंह आर्य, श्री महेन्द्र आर्य, श्री सत्यवान जेवली, श्री अजय शास्त्री, श्री रामावतार आर्य लोहारू, श्री धर्मपाल शास्त्री भांडवा, श्री प्रताप सिंह आर्य ढिगावा, श्री शिवलाल शास्त्री, श्री मंगल सिंह दलाल सेवानिवृत्त तहसीलदार आदि ने भी सम्मेलन की सफलता में अपना सक्रिय सहयोग दिया।

इस कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातः 6 से 8 बजे तक योगी स्वामी राजनाथ जी महाराज के द्वारा लोगों को योग का प्रशिक्षण दिया गया तथा 9 एवं 10 अक्टूबर, 2021 को आर्य महासम्मेलन भव्य रूप से आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में जातिवाद, नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड, कन्या भ्रूण हत्या आदि सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री दीपचन्द आर्य, बहन कल्याणी आर्या, श्री ज्ञानेन्द्र सिंह तेवतिया आदि के भजनों ने भी श्रोताओं को विशेष रूप से प्रेरित किया। दोनों दिन प्रातः यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान कर अनेक लोगों ने बुराईयाँ छोड़ने के संकल्प लिये। 10 अक्टूबर, 2021 को प्रातः 11 से 3 बजे तक आर्य महासम्मेलन का मुख्य कार्यक्रम आयाजित हुआ जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी, इनेलो के युवा नेता श्री विजय पचगांव, अन्तर्राष्ट्रीय पहलवान भारत के श्री बीरजू आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर जातिवाद के विरुद्ध पूरे समाज का आह्वान करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि जन्मना जाति समाज को विखण्डित एवं विभाजित करती है। परस्पर विद्वेष पैदा करती है। अतः यह आवश्यक है कि जन्मना जाति के बदले गुण, कर्म एवं स्वभाव के आधार पर समाज में मनुष्य का मूल्यांकन होना चाहिए। स्वामी जी ने विशेष रूप से दलित समाज के प्रति प्रत्येक लोगों की मानसिकता पर चोट करते हुए कहा कि सभी मनुष्य एक ईश्वर की सन्तान हैं, उन्हें चालाक एवं स्वार्थी लोगों ने जाति, मजहब, भाषा, देश एवं अन्य संकीर्णताओं में बांटा हुआ है। पूरे समाज में जातिगत तथा जातिवाद का जहर गहराई तक व्याप्त हो चुका है। ऐसे समय में आर्य समाज को उन सभी लोगों को गले लगाना चाहिए जिन्हें समाज के कुछ तथाकथित उच्च जातीय लोग अछूत मानते हैं, अस्पृश्य मानते हैं और उनके साथ घटिया स्तर का व्यवहार करते हैं।

विभिन्न प्रदेशों से और हरियाणा के विभिन्न जिलों से पधारे हुए सैकड़ों दलित नवयुवकों को इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने ओ३म् पटट पहनाकर और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चित्र भेंटकर सम्मानित किया। स्वामी जी ने पूरे दलित समाज एवं विशेषकर बाल्मिकी नवयुवकों से अपील की कि वे आर्य समाज में आयें। आर्य समाज के सदस्य बनें और समाज की मुख्यधारा के साथ जुड़कर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आर्य समाज के नेतृत्व में कार्य करें। स्वामी जी ने सभी नवयुवकों को नशे से दूर रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हम अपने खान–पान को और विचारों को यदि सात्विक एवं पवित्र बना लेते हैं और आर्य समाज के दस नियमों का पालन करते हैं तो हम आर्य कहलाते हैं। आर्य का मतलब श्रेष्ठ व्यक्ति से होता है। अतः इस वर्तमान समय में आवश्यकता है सभी श्रेष्ठ लोगों को संगठित करने की। स्वामी जी के आजेस्वी उद्बोधन के बाद ज्वाईंट एक्शन कमेटी के अध्यक्ष अन्तर्राष्ट्रीय पहलवान बीरजू ने स्वामी जी का आभार व्यक्त किया और कहा कि उन्हें आर्य समाज के बारे में इतना मालूम नहीं था, आज हम लोगों को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि आर्य समाज जन्म से किसी को छोटा–बड़ा नहीं मानता। हम आर्य समाज के साथ विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर मिलकर कार्य करेंगे। हम जहाँ भी बहन–बेटियों पर अत्याचार होते हैं या कहीं और कोई घटना घटती है उसमें अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। आर्य समाज के विचारों से हम अत्यन्त प्रभावित हुए हैं।

इस दो दिवसीय आर्य महासम्मेलन में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या और राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या, संत चरणदास जी महाराज, महात्मा दयानन्द गिरि आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा और एक बड़े संदेश के साथ सम्पन्न हुआ कि अब आर्य समाज सामाजिक अन्याय, जातिवाद, नशाखोरी, धार्मिक अन्धविश्वास आदि कुरीतियों के विरुद्ध और अधिक उत्साह के साथ कार्य करेगा। अन्त में श्री बाबूलाल आर्य ने सभी आगन्तुक महानुभावों का विद्वानों एवं उपदेशकों का और विशेषकर सभी बाल्मिकी नवयुवकों का हार्दिक धन्यवाद किया। महासम्मेलन के उपरान्त सभी ने सहभोज में भाग लिया।

आर्य समाज बोहर में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न

देश की आजादी में आर्य समाज का योगदान सर्वाधिक रहा है

– स्वामी आदित्यवेश

यज्ञों की परम्परा तीव्र गति से शुरू हो

– डॉ. जगदेव

आज युवाओं को संस्कारित करने की आवश्यकता है

– आचार्य विजयपाल

आर्य समाज बोहर, रोहतक द्वारा यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसकी पूर्णाहुति 15 अक्टूबर, 2021 विजयदशमी पर्व के साथ सम्पन्न हुआ। एक सप्ताह चलने वाले यजुर्वेद यज्ञ में विशेष रूप से मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी, गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल जी, डॉ. जगदेव सिंह विद्यालंकार जी, आचार्य यशवीर जी, आचार्य हरिदत्त उपाध्याय, स्वामी ब्रह्मानन्द जी मुजफ्फरनगर सहित अन्य अनेक विद्वान् उपस्थित रहे। यज्ञ के ब्रह्मा पद को डॉ. जगदेव सिंह विद्यालंकार जी ने सुशोभित किया। यज्ञ के दौरान विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की की ब्रह्मचारिणियों द्वारा वेद मंत्रो का उच्चारण बड़े ही सुन्दर ढंग से किया गया। यजुर्वेद पारायण महायज्ञ पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर उद्बोधन देते हुए मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि यज्ञ से ही मनुष्य का सही मायने में निर्माण होता है। आर्य समाज शुरू से ही मानव निर्माण के कार्य में लगा हुआ है। आजादी के समय स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने जो बिगुल बजाया उसी के अनुरूप देश के अनेक युवाओं आजादी के आन्दोलन में सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। देश की आजादी में सबसे अधिक योगदान आर्य समाज के कार्यकर्ताओं का रहा है उसी के फलस्वरूप आज पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है।

इस अवसर पर गुरुकुल झज्जर के संचालक आचार्य विजयपाल जी ने कहा कि वैदिक संस्कृति किसी वर्ग या स्थान विशेष के लिए नहीं बल्कि प्राणी मात्र के लिए है। आज शिक्षा में संस्कारों को शामिल करने की आवश्यकता है तभी नवयुवकों को एक नई दिशा मिलेगी।

महायज्ञ के ब्रह्मा डॉ. जगदेव सिंह विद्यालंकार ने कहा कि वेद सृष्टि के निर्माण का संविधान है। मानव निर्माण से लेकर सृष्टि के संचालन का पूरा ज्ञान वेद में निहित है।

इस अवसर पर आर्य समाज बोहर के संरक्षक और राजनेता श्री सतीश नांदल ने कहा कि आर्य समाज ही सामाजिक बुराईयों को मिटाने में सक्षम है, क्योंकि आर्य समाज का इतिहास आन्दोलनों से भरा पड़ा है।

इस अवसर पर मुजफ्फरनगर से पहुँचे स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने कहा कि यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिए।

आचार्य यशवीर जी ने कहा कि आज युवाओं को सही दिशा देने की आवश्यकता है। व्यसन वही जो आपको लक्ष्य से हटाकर अन्य जगह व्यस्त कर दे। इसलिए आज युवाओं को सही दिशा दिखाने की जरूरत है।

इस अवसर पर श्री जोगेन्द्र सिंह, श्री विनोद आर्य, डॉ. यशदेव शास्त्री, श्री संचित नांदल, आर्य समाज बोहर के प्रधान श्री धनीराम आर्य, श्री अजय आर्य, श्री विशाल आर्य, श्री जोगेन्द्र व श्री ओम प्रकाश, डॉ. विवेकानन्द, श्री सुमन, श्री कंवर सिंह गुलिया, श्री सुखवीर दहिया, डॉ. रविन्द्र शास्त्री, श्री वीरेन्द्र जे.ई., श्री गोपाल कृष्ण, श्री लीला पहलवान, श्री मीर सिंह, श्री सुनील कुमार, श्री मुकेश आर्य, श्री महादेव शास्त्री, श्री वीरेन्द्र लाठर जुलाना, श्री सुशील आर्य, श्री मनफूल सिंह, श्री बलवीर सिंह, श्री कंवर सिंह, पूजा आर्या, मीनू आर्या, सरिता आर्या, अंजलि आर्या, प्रीति आर्या, कीमती आर्या, सत्या आर्या, लता आर्या को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अन्त में नांदल खाप के प्रधान श्री ओम प्रकाश नांदल ने उपस्थित आर्यजनों के प्रति आभार प्रकट किया तथा कार्यक्रम का मंच संचालन श्री कृष्ण शास्त्री जी ने किया। यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के पूर्व मंत्री श्री रणवीर सिंह शास्त्री की

धर्मपत्नी श्रीमती रामदेवी का असामयिक निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के पूर्व मंत्री एवं आर्य समाज के विद्वान श्री रणवीर सिंह शास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती रामदेवी का गत दिनों असामयिक निधन हो गया। उनकी स्मृति में सैक्टर–3, रोहतक, हरियाणा में स्थित उनके निवास पर 18 अक्टूबर, 2021 को शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी शोक संतप्त परिवार को सांत्वना देने तथा दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए शांति यज्ञ में सम्मिलित हुए। उनके साथ युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, श्री धर्मेन्द्र कुमार जी, बहन पूनम जी एवं बहन प्रवेश आर्या जी, डॉ. स्वतंत्रानन्द शास्त्री जी, डी.एस.पी. अर्जुन सिंह जी, डॉ. विवेकानन्द शास्त्री जी, श्रीमती प्रतिभा सुमन पूर्व अध्यक्ष महिला आयोग हरियाणा एवं उनके पति श्री विजय कुमार आर्य, हरियाणा सभा के पूर्व मंत्री श्री सत्यवीर सिंह शास्त्री, श्री सत्यवीर शास्त्री मदाना, श्री महावीर शास्त्री धीर, श्री कृष्ण शास्त्री बोहर आदि ने भी शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी सांत्वना व्यक्त की। शांति यज्ञ श्री सत्यवीर शास्त्री जी ने सम्पन्न कराया और सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति की प्रार्थना की।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने स्वर्गीया रामदेवी को एक सद्गृहणी, धर्मपारायणा एवं गम्भीर व्यक्तित्व की धनी बताया। वे पूरे परिवार की परवरिश करने में दक्ष थीं और उन्होंने अपने सभी बच्चों को संस्कारित एवं शिक्षित किया। उनके असामयिक निधन से परिवार एवं आर्य समाज की विशेष क्षति हुई है। स्वामी जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री रणवीर सिंह शास्त्री ने सभी आगन्तुक महानुभावों का इस अवसर पर आभार व्यक्त किया।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य
वयोवृद्ध आर्य संन्यासी स्वामी सवितानन्द जी महाराज पंचतत्त्व में विलीन

आर्य जगत के वयोवृद्ध संन्यासी एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य स्वामी सवितानन्द जी महाराज का 2 अक्टूबर, 2021 (शनिवार) को रांची (झारखण्ड) में अचानक निधन हो गया। स्वामी सवितानन्द जी जीवनभर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के कार्य में सक्रिय रहे। संन्यास दीक्षा से पूर्व भी वह (पूर्व नाम गोविन्द प्रसाद) वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहे। संन्यास दीक्षा लेने के पश्चात् उन्होंने अनेकों यज्ञों में ब्रह्मा के पद को भी सुशोभित किया। वह देश के विभिन्न प्रदेशों में आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहे।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी उनके निधन पर दुःख व्यक्त करते हुए वयोवृद्ध वैदिक धर्म के लिए पूर्णतया समर्पित स्वामी सवितानन्द जी सरस्वती के जीवनवृत्त के बारे में बताते हुए कहा कि वे आर्य समाज की ऐसी महान विभूति थे जिन्होंने आर्य समाज के सिद्धान्तों और मन्तव्यों पर अटूट श्रद्धा एवं आस्था रखते हुए बिहार, झारखण्ड सहित पूरे देश में आर्य समाज की दुंदुभी बजाई तथा समाजसेवा के सराहनीय कार्य किये। स्वामी जी दूसरों की सेवा और परोपकार को ही जीवन का उद्देश्य मानते थे। 31 जनवरी, 1939 को झारखण्ड राज्य के ग्राम चतरा में श्री दशरथ शाह एवं माता श्रीमती यशोदा देवी जी की कोख से जन्में बालक के माता-पिता ने बड़ी आशाओं के साथ आपका नाम गोविन्द प्रसाद रखा था। प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करते-करते स्वामी सवितानन्द जी आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के रंग में पूरी तरह से रंग गये। 1964 में स्वामी जी ने अपना कार्यक्षेत्र रांची जिले को बनाया और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए सर्वात्मना समर्पित हो गये। सामाजिक, राष्ट्रीय तथा धार्मिक समस्याओं पर स्वामी जी गहरा चिन्तन करते थे और वे

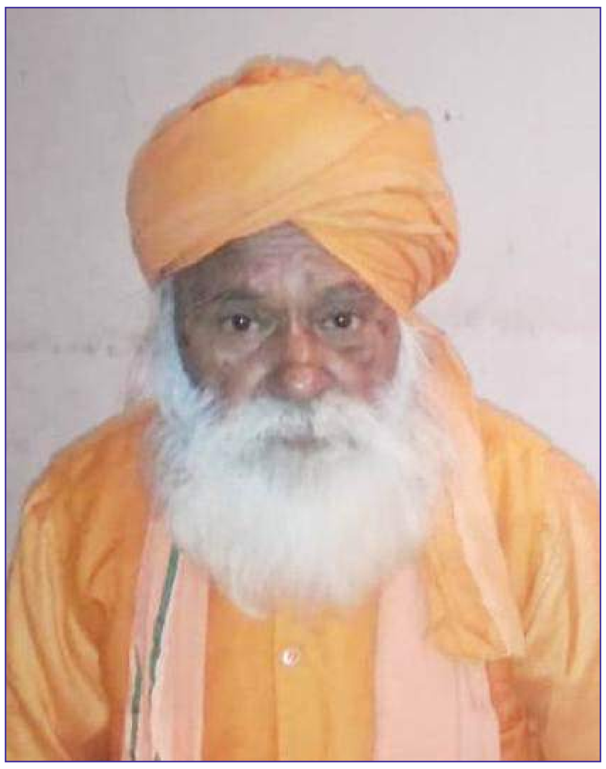

समय-समय पर इन समस्याओं पर भी आवाज बुलन्द करते रहते थे। स्वामी सवितानन्द जी दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार में अध्ययन एवं बाद में प्रचार कार्य भी बड़ी निष्ठा के साथ करते रहे। वर्तमान में स्वामी जी आर्य समाज के शिरोमणि संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग के सदस्य थे। झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा को स्वामी सवितानन्द जी का अमूल्य मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है।

सन् 2008 में स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा) से संन्यास दीक्षा ग्रहण करके गोविन्द प्रसाद विद्यावारिधि से स्वामी सवितानन्द सरस्वती नाम ग्रहण करने के बाद अपना पूरा जीवन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को पूर्ण करने के लिए समर्पित कर दिया था। स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा दीक्षित आप उनके पहले शिष्य संन्यासी रहे। दयानन्द मठ चम्बा में होने वाले शारद यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में कई बार प्रतिष्ठित होते रहे तथा हजारों रुपये का सहयोग भी आप करते रहते थे। आपने संन्यास की दीक्षा भी चम्बा में ही ली थी। स्वामी जी झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची में रहकर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार का कार्य तथा बिहार, झारखण्ड आदि प्रान्तों में मिशनरी गतिविधियों के विरुद्ध प्राणपण से लगे हुए थे और हजारों बन्धुओं को शुद्ध करके वैदिक धर्म में लाने का भागीरथ कार्य करते रहते थे।

स्वामी सवितानन्द जी अत्यन्त दानी स्वभाव के आदर्श संन्यासी थे। आर्य समाज का प्रचार कार्य करते हुए दक्षिणास्वरूप में जो धन आपको प्राप्त होता था उसे संचित करके आप सेवा कार्यों में व्यय करते रहते थे। इसी प्रकार आर्य साहित्य प्रकाशन एवं वेद प्रचार के कार्यों के लिए भी आप निरन्तर सहयोग प्रदान करते रहते थे।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि ऐसे त्यागी, तपस्वी एवं कर्त्तव्यनिष्ठ संन्यासी का निधन आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

गुरुकुल धीरणवास, हिसार (हरियाणा) के पूर्व प्रधान एवं कोषाध्यक्ष
श्री ताराचन्द्र आर्य जी का आकस्मिक निधन

गुरुकुल धीरणवास, हिसार (हरियाणा) के पूर्व प्रधान एवं कोषाध्यक्ष तथा आर्य समाज के कर्मठ एवं प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता श्री ताराचन्द आर्य जी 'सीसवाला' का दिनांक 18 अक्टूबर, 2021 (सोमवार) को अचानक निधन हो गया है। श्री ताराचन्द जी मिलनसार एवं शालीन व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में समाजसेवा, परोपकार तथा समर्पण भाव से कार्य किया। वे सदैव आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में अपना सराहनीय योगदान प्रदान करते रहे। श्री ताराचन्द जी मृत्यु से एक दिन पूर्व गुरुकुल धीरणवास की अन्तरंग सभा की बैठक में सम्मिलित हुए। वे जब भी किसी कार्यक्रम में मिलते थे तो बड़ी प्रसन्नता के साथ मिलते थे और सामाजिक कार्यों के लिए विचार-विमर्श किया करते थे। उन्होंने हमेशा गुरुकुलों को तथा अन्य सामाजिक संगठनों को दान दिया करते थे तथा औरों को भी सामाजिक कार्यों के लिए दान देने के लिए प्रेरित किया करते थे।

श्री ताराचन्द जी अपने पीछे तीन सुपुत्र सर्वश्री धर्मवीर, यशवीर एवं कर्मवीर के अतिरिक्त भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। ऐसे लगनशील, कर्मठ एवं दानदाता, आर्य समाज के पुरानी पीढ़ी के कार्यकर्ता का अचानक निधन आर्य समाज संगठन एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति है। इस दुःख की घड़ी में हम सब उनके परिवार के साथ हैं। श्री ताराचन्द जी भले ही नश्वर शरीर को छोड़कर चले गये हैं परन्तु उन्होंने अपने जीवनकाल में जो समाजसेवा के कार्य किये हैं वह अविस्मरणीय रहेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उन्हीं के संस्कारों के अनुरूप उनके सुपुत्र आर्य समाज एवं समाजसेवा के कार्यों को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा उनके पारिवारिकजनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

आर्य समाज भीलवाड़ा (राज.) के प्रधान श्री विजय शर्मा जी को पुत्र शोक

आर्य समाज भीलवाड़ा (राज.) के प्रधान श्री विजय शर्मा जी के सुयोग्य युवा पुत्र श्री अभिषेक शर्मा का दिनांक 11 अक्टूबर, 2021 (सोमवार) को असमय निधन हो गया है। श्री विजय शर्मा जी का परिवार विगत काफी समय से आर्य समाज संगठन से जुड़ा हुआ है, इनके पूज्य पिता स्व. श्री रतीराम जी शर्मा आर्य समाज सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल के वर्षों तक प्रधान रहे। यद्यपि श्री विजय शर्मा जी का जन्म हरियाणा के भिवानी जिले में देवराला नामक गाँव में हुआ था, परन्तु अपनी व्यवसायिक गतिविधियों के संचालन हेतु उनका परिवार भीलवाड़ा (राज.) में काफी समय पूर्व ही आ गया था और वहां पर आर्य समाज के कार्यों में भी निरन्तर सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहा है। श्री विजय शर्मा जी की आर्य समाज संगठन के प्रति समर्पण को देखते हुए आर्य समाज भीलवाड़ा का प्रधान पद सौंपा गया है।

इसी के साथ-साथ आप श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के भी न्यासी हैं और आर्य समाज के सिद्धान्तों में इनकी अगाध श्रद्धा है। ऐसे समाजसेवी एवं आर्य समाज के प्रतिष्ठित अधिकारी के युवा सुपुत्र का असामयिक निधन उनके परिवार एवं आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है। किसी भी माता-पिता के लिए सुपुत्र का निधन सबसे अधिक दुःखदायी होता है। श्री विजय शर्मा जी के दिवंगत युवा पुत्र अभिषेक शर्मा का असामयिक निधन निःसंदेह अत्यन्त दुःखद घटना है। होनहार नवयुवक श्री अभिषेक शर्मा जी के निधन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।